Indian Journal of Multidisciplinary Research and Studies
ISSN: 3108-1681 | Volume- 1, Issue- 3 | July- September 2025

कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक का रूपांतरण: हिंसा से धम्म विजय तक की यात्रा

कोमल यादव
V.S.S.D College, Kanpur

सारांश

कलिंग युद्ध मौर्य सम्राट अशोक के जीवन की वह ऐतिहासिक घटना थी, जिसने उसके व्यक्तित्व और शासन-दृष्टि को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। इस युद्ध की भीषणता और व्यापक जन-धन की हानि ने अशोक को आत्ममंथन के लिए विवश किया, जिसके परिणामस्वरूप उसने दिग्विजय की नीति का परित्याग कर धम्म विजय को अपनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में कलिंग युद्ध के कारणों, स्वरूप तथा उसके दुष्परिणामों का विश्लेषण करते हुए अशोक के वैचारिक रूपांतरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। साथ ही धम्म की संकल्पना, उसके प्रचार-प्रसार के साधन तथा उसके सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों का सम्यक् विवेचन किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि अशोक का परिवर्तन केवल व्यक्तिगत धार्मिक आस्था का परिणाम न होकर एक व्यापक मानवीय और लोककल्याणकारी शासन-दृष्टि का प्रतीक था, जिसने भारतीय इतिहास को एक नई दिशा प्रदान की।

मुख्य शब्दः अशोक, कलिंग युद्ध, धम्म, धम्म विजय, मौर्य साम्राज्य, अहिंसा, लोककल्याणकारी राज्य

प्रस्तावना

मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास का प्रथम महान् अखिल–भारतीय साम्राज्य था, जिसने राजनीतिक एकता, सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक समन्वय की परम्परा को स्थापित किया। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित इस साम्राज्य को बिन्दुसार ने सुदृढ़ आधार प्रदान किया, परन्तु सम्राट अशोक के शासनकाल में यह अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा। अशोक न केवल एक महान् विजेता और कुशल प्रशासक था, बल्कि वह भारतीय इतिहास में नैतिकता, मानवता और शान्ति का संदेश देने वाले अद्वितीय शासक के रूप में भी प्रतिष्ठित हुआ। अशोक के जीवन में कलिंग युद्ध एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। राज्यारोहण के प्रारम्भिक वर्षों में उसने पारम्परिक साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते हुए अपने राज्य का विस्तार किया और इसी क्रम में कलिंग पर आक्रमण किया। कलिंग सामरिक, आर्थिक तथा समुद्री व्यापार की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र था, अतः उसका अधिग्रहण मौर्य साम्राज्य के लिए अनिवार्य माना गया। किन्तु इस युद्ध की भीषणता, व्यापक जन–धन की हानि और असंख्य लोगों के दुःख–दर्द ने अशोक के हृदय को उद्वेलित कर दिया। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक के व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आया, वह विश्व इतिहास में अद्वितीय माना जाता है। उसने हिंसा और दिग्विजय की नीति का परित्याग कर धम्म विजय को अपनाया। यह धम्म किसी संकीर्ण धार्मिक मत का प्रतीक न होकर नैतिक–सामाजिक आचरण की ऐसी संहिता थी, जिसमें अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, दया, सत्य और प्रजा–कल्याण की भावना निहित थी। अशोक ने अपने शिलालेखों और स्तम्भलेखों के माध्यम से इस धम्म का प्रचार–प्रसार किया और शासन को मानवीय मूल्यों से अभिसिंचित किया।

अतः "कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक का रूपांतरण: हिंसा से धम्म विजय तक की यात्रा" विषय न केवल एक ऐतिहासिक घटना का अध्ययन है, बल्कि यह सत्ता, नैतिकता और मानवता के समन्वय का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में, जब विश्व हिंसा, संघर्ष और असहिष्णुता की समस्याओं से जूझ रहा है, अशोक का यह रूपांतरण शान्ति, सह–अस्तित्व और नैतिक शासन की प्रेरणा प्रदान करता है। इस शोध का उद्देश्य कलिंग युद्ध के

प्रभावों का विश्लेषण करते हुए अशोक के वैचारिक परिवर्तन, धम्म की संकल्पना तथा उसके ऐतिहासिक महत्व का सम्यक् अध्ययन करना है।

कलिंग युद्ध : कारण एवं स्वरूप

मौर्य साम्राज्य के विस्तारवादी इतिहास में कलिंग युद्ध एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना के रूप में परिलक्षित होता है। अशोक के राज्यारोहण के पश्चात् मौर्य साम्राज्य उत्तर, पश्चिम तथा मध्य भारत के विशाल भूभाग पर अपना अधिकार स्थापित कर चुका था, किन्तु पूर्वी तट पर स्थित कलिंग एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली राज्य के रूप में विद्यमान था। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र वर्तमान उड़ीसा के तटीय भागों में फैला हुआ था और समुद्री व्यापार, सामरिक सुरक्षा तथा दक्षिण भारत से संपर्क स्थापित करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इस प्रकार कलिंग का स्वतंत्र अस्तित्व मौर्य साम्राज्य की अखिल-भारतीय राजनीतिक एकता की नीति के लिए एक चुनौती बना हुआ था।

कलिंग युद्ध के प्रमुख कारणों में राजनीतिक, आर्थिक तथा सामरिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। राजनीतिक दृष्टि से अशोक अपने पूर्ववर्तियों की साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते हुए सम्पूर्ण भारत को एक सत्ता के अधीन लाना चाहता था। कलिंग की स्वतंत्रता मौर्य साम्राज्य की पूर्वी सीमा पर एक ऐसे शक्तिशाली राज्य की उपस्थिति को दर्शाती थी, जो साम्राज्य की एकता के मार्ग में बाधक था। आर्थिक दृष्टि से कलिंग समुद्री व्यापार का प्रमुख केन्द्र था और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों का माध्यम था। अतः उस पर अधिकार स्थापित करना मौर्य साम्राज्य की आर्थिक समृद्धि के लिए आवश्यक समझा गया। सामरिक दृष्टि से भी कलिंग का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण था, क्योंकि उसके माध्यम से दक्षिण भारत के राज्यों पर नियंत्रण स्थापित करना संभव था।

कलिंग युद्ध का स्वरूप अत्यन्त भीषण और विनाशकारी था। इस युद्ध का प्रमुख स्रोत अशोक का तेरहवाँ शिलालेख है, जिसमें युद्ध की विभीषिका का मार्मिक वर्णन प्राप्त होता है। इस अभिलेख के अनुसार इस युद्ध में लगभग एक लाख लोग मारे गए, डेढ़ लाख लोग बंदी बनाए गए और इससे भी अधिक लोग विभिन्न प्रकार की पीड़ाओं से ग्रस्त हुए। युद्ध केवल सैनिकों तक सीमित नहीं था, बल्कि सामान्य जनता भी इसके दुष्परिणामों का शिकार बनी। परिवारों का विघटन, आर्थिक संकट और सामाजिक अस्थिरता इस युद्ध के प्रमुख परिणाम थे। इस प्रकार कलिंग युद्ध केवल एक राजनीतिक विजय नहीं था, बल्कि मानवीय त्रासदी का भी प्रतीक बन गया।

युद्ध की प्रकृति से स्पष्ट होता है कि यह मौर्य साम्राज्य की पारम्परिक दिग्विजय की नीति का परिणाम था, जिसमें सैन्य शक्ति के माध्यम से क्षेत्रीय विस्तार को प्राथमिकता दी जाती थी। किन्तु कलिंग की जनता द्वारा किए गए सशक्त प्रतिरोध ने इस युद्ध को अत्यन्त संघर्षपूर्ण बना दिया। यही कारण था कि विजय प्राप्त करने के पश्चात् भी अशोक को आत्मसंतोष के स्थान पर गहन पश्चाताप की अनुभूति हुई।

इस प्रकार कलिंग युद्ध के कारणों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह युद्ध केवल क्षेत्रीय विस्तार की नीति का परिणाम नहीं था, बल्कि इसके पीछे राजनीतिक एकीकरण, आर्थिक हित तथा सामरिक आवश्यकताएँ भी निहित थीं। वहीं इसके स्वरूप का अध्ययन यह दर्शाता है कि यह युद्ध अत्यन्त रक्तपातपूर्ण और मानवीय दृष्टि से विनाशकारी था, जिसने अशोक के जीवन में एक ऐसे परिवर्तन की भूमिका तैयार की, जिसके परिणामस्वरूप उसने हिंसा की नीति का परित्याग कर धम्म विजय की नीति को अपनाया।

युद्ध के दुष्परिणाम एवं अशोक का मानसिक परिवर्तन

कलिंग युद्ध की समाप्ति के पश्चात् जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, वे केवल एक राजनीतिक विजय की घोषणा भर नहीं थीं, बल्कि मानवीय त्रासदी का अत्यन्त मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती थीं। इस युद्ध में हुए व्यापक जन-संहार, असंख्य

लोगों के बंदी बनाए जाने तथा परिवारों के विघटन ने सामाजिक और आर्थिक जीवन को गहरे रूप में प्रभावित किया। अशोक के तेरहवें शिलालेख से ज्ञात होता है कि लगभग एक लाख लोग युद्ध में मारे गए, डेढ़ लाख लोग निर्वासित अथवा बंदी बनाए गए तथा इससे कहीं अधिक लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्धजनित पीड़ाओं से ग्रस्त हुए। इस प्रकार कलिंग की विजय मौर्य साम्राज्य के लिए भौगोलिक विस्तार का प्रतीक अवश्य थी, किन्तु मानवीय दृष्टि से यह अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध हुई।

युद्ध के इन भीषण परिणामों ने स्वयं सम्राट अशोक के मन पर गहरा प्रभाव डाला। एक विजेता के रूप में जहाँ पारम्परिक राजसत्ता युद्ध में प्राप्त सफलता पर गर्व का अनुभव करती थी, वहीं अशोक ने इस विजय को आत्मग्लानि और पश्चाताप के रूप में अनुभव किया। तेरहवें शिलालेख में वह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि कलिंग की विजय के पश्चात् उसे 'धम्मलिपि' के माध्यम से यह अनुभूति हुई कि इतने बड़े पैमाने पर मनुष्यों की हत्या, निर्वासन और उनके दुःख–दर्द का कारण बनना न केवल नैतिक दृष्टि से अनुचित है, बल्कि एक शासक के रूप में उसकी जिम्मेदारी के भी विपरीत है। यह स्वीकारोक्ति विश्व इतिहास में किसी भी विजेता द्वारा व्यक्त की गई अद्वितीय मानवीय संवेदना का उदाहरण है।

अशोक के इस मानसिक परिवर्तन के पीछे केवल करुणा की भावना ही नहीं थी, बल्कि शासन की प्रकृति के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण भी निहित था। उसने यह अनुभव किया कि वास्तविक विजय सैन्य शक्ति से प्राप्त क्षेत्रीय विस्तार में नहीं, बल्कि प्रजा के हृदयों को जीतने में निहित है। इस प्रकार पारम्परिक 'दिग्विजय' की अवधारणा का स्थान 'धम्म विजय' की भावना ने ग्रहण किया। अब उसका लक्ष्य राज्य की सीमाओं का विस्तार न होकर प्रजा के नैतिक उत्थान, सामाजिक समन्वय और मानवतावादी मूल्यों की स्थापना बन गया।

युद्धोत्तर परिस्थितियों में अशोक के व्यक्तिगत जीवन में भी उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। उसने हिंसा, अनावश्यक पशु–हत्या तथा शिकार जैसी प्रवृत्तियों का परित्याग किया और धर्मयात्राओं को अपनाया। वह प्रजा के दुःख–दर्द को प्रत्यक्ष रूप से समझने लगा तथा प्रशासन को अधिक मानवीय और लोककल्याणकारी बनाने का प्रयास किया। इस परिवर्तन का प्रभाव केवल उसकी व्यक्तिगत आस्थाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसकी सम्पूर्ण शासन–व्यवस्था में परिलक्षित हुआ।

बौद्ध धर्म की ओर झुकाव

कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक के व्यक्तित्व में जो गहन नैतिक एवं वैचारिक परिवर्तन हुआ, उसने उसे आध्यात्मिक शान्ति और मानवीय मूल्यों की खोज की ओर प्रेरित किया। युद्ध की विभीषिका से उत्पन्न आत्मग्लानि ने उसे यह अनुभव कराया कि केवल राजनीतिक शक्ति और क्षेत्रीय विस्तार एक आदर्श शासक की पहचान नहीं हो सकते। इसी मानसिक द्वन्द्व और शान्ति की खोज ने अशोक को बौद्ध धर्म की ओर उन्मुख किया। यद्यपि प्रारम्भ में वह बौद्ध धर्म का औपचारिक अनुयायी नहीं बना था, तथापि उसके विचारों और नीतियों में बौद्ध नैतिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगा।

बौद्ध परम्पराओं में यह उल्लेख मिलता है कि अशोक का संपर्क निग्रोढ़ तथा उपगुप्त जैसे बौद्ध भिक्षुओं से हुआ, जिनके उपदेशों ने उसके जीवन–दृष्टिकोण को प्रभावित किया। इन भिक्षुओं ने उसे करुणा, अहिंसा, मध्यम मार्ग, आत्मसंयम और समता का संदेश दिया, जो उसके अन्तर्मन में चल रहे पश्चाताप और शान्ति की खोज के अनुकूल था। परिणामस्वरूप अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को न केवल व्यक्तिगत जीवन में अपनाया, बल्कि उन्हें शासन की नीतियों का भी आधार बनाया।

अशोक द्वारा बौद्ध धर्म को अपनाने की प्रक्रिया एक क्रमिक विकास का परिणाम थी। उसने पहले बौद्ध धर्म के नैतिक उपदेशों को ग्रहण किया, तत्पश्चात् बौद्ध संघ के प्रति सम्मान प्रकट किया और अंततः बौद्ध धर्म का संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार प्रारम्भ किया। भाभ्रू शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति गहरी श्रद्धा रखता था तथा बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन और उनके पालन की प्रेरणा देता था। तथापि यह उल्लेखनीय है कि अशोक ने अपने 'धम्म' को किसी संकीर्ण धार्मिक रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे सार्वभौमिक नैतिक आचार–संहिता के रूप में विकसित किया, जिसमें सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सम्मान का भाव निहित था।

अशोक के जीवन में बौद्ध धर्म के प्रभाव का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि उसने धर्म को व्यक्तिगत मोक्ष का साधन न मानकर सामाजिक नैतिकता और लोककल्याण का माध्यम बनाया। उसने धर्मयात्राओं का आरम्भ किया, बौद्ध तीर्थस्थलों का भ्रमण किया तथा प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए उपदेशों का प्रचार किया। उसके शिलालेखों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि वह सभी सम्प्रदायों के प्रति सम्मान और समन्वय की भावना को प्रोत्साहित करता था।

धम्म की संकल्पना एवं स्वरूप

अशोक के शासनकाल में प्रतिपादित 'धम्म' की संकल्पना भारतीय इतिहास में एक नवीन एवं व्यापक नैतिक दृष्टिकोण का परिचायक है। यह धम्म किसी संकीर्ण धार्मिक मत, सम्प्रदाय या कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं था, अपितु यह सामाजिक आचरण की ऐसी सार्वभौमिक नैतिक संहिता थी, जिसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज और राज्य के मध्य समन्वय स्थापित करना था। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने जिस धम्म को अपनाया और प्रचारित किया, उसका मूल आधार मानवीय संवेदना, नैतिक अनुशासन और लोककल्याण की भावना थी।

अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट होता है कि धम्म का प्रमुख उद्देश्य प्रजा के नैतिक उत्थान को सुनिश्चित करना था। इसमें माता–पिता की सेवा, गुरुजनों का सम्मान, ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति सद्भाव, दासों और सेवकों के साथ मानवीय व्यवहार, सत्यवादिता, अहिंसा, करुणा, क्षमा और संयम जैसे गुणों पर विशेष बल दिया गया। इस प्रकार धम्म व्यक्तिगत जीवन में नैतिक अनुशासन तथा सामाजिक जीवन में सद्भाव और सहिष्णुता की स्थापना का माध्यम बना।

अशोक के धम्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता धार्मिक सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव की भावना थी। उसने अपने शिलालेखों में स्पष्ट रूप से कहा कि सभी सम्प्रदायों का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि अन्य धर्मों की निन्दा करने से अपने धर्म की हानि होती है। इस प्रकार उसका धम्म किसी एक धार्मिक परम्परा का समर्थन न होकर विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के मध्य समन्वय और पारस्परिक सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करता था। यह नीति उस समय के बहुधार्मिक भारतीय समाज में सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुई।

धम्म का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष लोककल्याण की भावना से संबंधित था। अशोक ने अपने प्रशासनिक कार्यों को नैतिक आधार प्रदान करते हुए प्रजा की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनेक उपाय किए। मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालयों की व्यवस्था, सड़कों के किनारे वृक्षारोपण, कुओं और धर्मशालाओं का निर्माण, जलाशयों की व्यवस्था तथा यात्रियों के लिए विश्राम–गृहों की स्थापना जैसे कार्य धम्म की व्यावहारिक अभिव्यक्ति थे। इससे स्पष्ट होता है कि धम्म केवल सैद्धान्तिक उपदेश न होकर लोककल्याणकारी नीतियों के रूप में भी प्रकट हुआ।

अशोक के धम्म में अहिंसा की भावना को विशेष महत्व दिया गया, किन्तु यह जैन धर्म की कठोर अहिंसा की तरह पूर्णतः निषेधात्मक नहीं था। उसने अनावश्यक पशु–हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया और युद्ध की नीति का परित्याग

किया, परन्तु राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक दण्ड व्यवस्था को बनाए रखा। इस प्रकार उसका धम्म व्यावहारिक और संतुलित था, जिसमें नैतिक आदर्शों और प्रशासनिक आवश्यकताओं के मध्य समन्वय स्थापित किया गया।

धम्म विजय की नीति

कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक की शासन–दृष्टि में जो मूलभूत परिवर्तन हुआ, उसका प्रत्यक्ष रूप 'धम्म विजय' की नीति में परिलक्षित होता है। पारम्परिक मौर्य शासकों की दिग्विजय की नीति जहाँ सैन्य शक्ति के माध्यम से क्षेत्रीय विस्तार और राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना पर आधारित थी, वहीं अशोक ने धम्म को शासन का आधार बनाकर नैतिक विजय को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। यह नीति न केवल उसकी व्यक्तिगत अनुभूति का परिणाम थी, बल्कि शासन की प्रकृति और उद्देश्य के पुनर्निर्धारण का भी संकेत देती है।

अशोक के तेरहवें शिलालेख में धम्म विजय का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है, जिसमें वह कहता है कि कलिंग युद्ध के पश्चात् उसने यह अनुभव किया कि वास्तविक विजय शस्त्रबल से नहीं, बल्कि प्रजा के हृदयों को जीतने में निहित है। इस प्रकार उसने सैन्य विस्तार की नीति का परित्याग कर नैतिक प्रभाव के माध्यम से विभिन्न राज्यों और जनसमुदायों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र तथा श्रीलंका जैसे दक्षिणी राज्यों के साथ उसके संबंध इसी नीति के अंतर्गत विकसित हुए। यह भी उल्लेखनीय है कि यूनानी शासकों के साथ उसके मैत्रीपूर्ण संपर्क धम्म विजय की व्यापक अंतरराष्ट्रीय दृष्टि को दर्शाते हैं।

धम्म विजय की नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि इसमें प्रजा–कल्याण को शासन का प्रमुख उद्देश्य बनाया गया। अशोक ने अपने प्रशासनिक अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि वे प्रजा के साथ मानवीय व्यवहार करें और उनके सुख–दुःख का ध्यान रखें। 'धम्म महामात्रों' की नियुक्ति इसी उद्देश्य से की गई थी, ताकि वे विभिन्न वर्गों के मध्य नैतिक समन्वय स्थापित करें और धम्म के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करें। इससे शासन का स्वरूप अधिक लोककल्याणकारी और नैतिक बन गया।

इस नीति के अंतर्गत अशोक ने दण्ड–व्यवस्था में भी मानवीय दृष्टिकोण अपनाया। उसने कारावास में बंद व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति का व्यवहार करने, मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों को कुछ समय की मोहलत देने तथा न्यायिक प्रक्रिया को अधिक उदार बनाने जैसे उपाय किए। इससे स्पष्ट होता है कि धम्म विजय केवल बाह्य संबंधों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह प्रशासनिक प्रणाली के मानवीकरण का भी माध्यम बनी।

धम्म विजय की नीति का प्रभाव सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में भी दिखाई देता है। अशोक ने धर्म–प्रचार को युद्ध के स्थान पर सांस्कृतिक संपर्क का साधन बनाया। उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजकर बौद्ध धर्म का प्रचार कराया तथा अन्य क्षेत्रों में भी धर्म–दूतों को प्रेषित किया। यह कार्य किसी राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना के लिए नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के उद्देश्य से किया गया था।

धम्म के प्रचार–प्रसार के साधन

अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म केवल एक वैचारिक अवधारणा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसके व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए सम्राट ने संगठित और योजनाबद्ध उपाय किए। इन उपायों का उद्देश्य प्रजा के नैतिक उत्थान के साथ–साथ सम्पूर्ण साम्राज्य में एक ऐसी सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता स्थापित करना था, जो मानवीय मूल्यों पर आधारित हो। धम्म के प्रचार के लिए अपनाए गए साधन प्रशासनिक, अभिलेखीय, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सभी स्तरों पर सक्रिय दिखाई देते हैं।

धम्म के प्रसार का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम अशोक के शिलालेख और स्तम्भलेख थे। इन्हें साम्राज्य के विभिन्न भागों में स्थापित किया गया, ताकि धम्म से संबंधित उसके आदेश, उपदेश और नीतियाँ सीधे प्रजा तक पहुँच सकें। इन अभिलेखों की भाषा सरल एवं जनसामान्य के लिए बोधगम्य थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अशोक धम्म को केवल अभिजात वर्ग तक सीमित न रखकर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाना चाहता था। इन शिलालेखों में नैतिक आचरण, धार्मिक सहिष्णुता, प्रजा–कल्याण तथा अहिंसा के सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है, जो धम्म की व्यावहारिक अभिव्यक्ति थे।

धम्म के प्रचार–प्रसार के लिए अशोक ने 'धम्म महामात्रों' की नियुक्ति की, जो विशेष रूप से प्रजा के नैतिक जीवन की उन्नति के लिए उत्तरदायी थे। इन अधिकारियों का कार्य विभिन्न सामाजिक और धार्मिक वर्गों के मध्य समन्वय स्थापित करना, स्त्रियों और वृद्धों के कल्याण की व्यवस्था करना तथा धम्म से संबंधित उपदेशों का प्रसार करना था। इससे स्पष्ट होता है कि धम्म का प्रचार केवल उपदेशों तक सीमित न रहकर प्रशासनिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया था।

अशोक ने धर्मयात्राओं को भी धम्म के प्रचार का महत्वपूर्ण साधन बनाया। अपने शासन के प्रारम्भिक चरण में जहाँ वह विहार–यात्राएँ और शिकार जैसे मनोरंजनात्मक कार्य करता था, वहीं बाद में उसने बौद्ध तीर्थस्थलों की यात्राएँ प्रारम्भ कीं। इन यात्राओं के माध्यम से वह प्रजा के साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करता था और उन्हें नैतिक जीवन के लिए प्रेरित करता था। बोधगया, लुम्बिनी तथा सारनाथ जैसे पवित्र स्थलों की उसकी यात्राएँ इस दिशा में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

धम्म के प्रचार में स्तूपों, विहारों तथा स्मारकों का निर्माण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था। अशोक ने बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक स्मारकों का निर्माण कराया और पुराने स्तूपों का पुनरुद्धार किया। इन स्थापत्य कार्यों ने न केवल धार्मिक चेतना को सुदृढ़ किया, बल्कि कला और स्थापत्य के विकास को भी प्रोत्साहन दिया।

धम्म के अंतरराष्ट्रीय प्रसार के लिए अशोक ने धर्म–दूतों को विभिन्न देशों में भेजा। श्रीलंका में महेन्द्र और संघमित्रा द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है। इसके अतिरिक्त मध्य एशिया, सीरिया, मिस्र तथा यूनानी शासकों के राज्यों में भी धर्म–प्रचार के प्रयास किए गए। यह कार्य किसी राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना के लिए नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक समन्वय के उद्देश्य से किया गया था।

सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव

अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म और उसकी धम्म विजय की नीति का प्रभाव केवल धार्मिक या नैतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव मौर्यकालीन समाज, प्रशासन तथा सांस्कृतिक जीवन पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। कलिंग युद्ध के पश्चात् अपनाई गई मानवीय शासन–दृष्टि ने राज्य की प्रकृति को एक लोककल्याणकारी व्यवस्था में रूपांतरित कर दिया। इस प्रकार अशोक का शासन भारतीय इतिहास में एक ऐसे आदर्श के रूप में उभरता है, जिसमें सत्ता और नैतिकता का समन्वय दिखाई देता है।

सामाजिक दृष्टि से धम्म ने विभिन्न वर्गों और सम्प्रदायों के मध्य सद्भाव और सहिष्णुता की भावना को सुदृढ़ किया। अशोक ने अपने शिलालेखों में सभी धर्मों के प्रति सम्मान और पारस्परिक समन्वय पर बल दिया, जिससे बहुधार्मिक भारतीय समाज में एकता की भावना को प्रोत्साहन मिला। ब्राह्मणों और श्रमणों के प्रति समान आदर, दासों और सेवकों के साथ मानवीय व्यवहार तथा स्त्रियों के नैतिक उत्थान के लिए विशेष प्रावधान सामाजिक समरसता के महत्वपूर्ण संकेतक थे। इससे समाज में नैतिक अनुशासन और पारिवारिक मूल्यों को भी बल मिला।

राजनीतिक दृष्टि से अशोक के शासन का स्वरूप अधिक मानवीय और उत्तरदायी बन गया। प्रशासनिक अधिकारियों को प्रजा के सुख–दुःख का ध्यान रखने तथा न्यायिक प्रक्रिया में उदारता अपनाने के निर्देश दिए गए। 'धम्म महामात्रों' की नियुक्ति ने शासन और प्रजा के मध्य प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया, जिससे प्रशासनिक व्यवस्था अधिक संवेदनशील और प्रभावी बनी। दण्ड–व्यवस्था में सुधार, मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों को मोहलत तथा कारागारों में मानवीय व्यवहार जैसे उपाय उस समय की शासन प्रणाली में एक नवीन दृष्टिकोण के परिचायक थे।

अशोक की लोककल्याणकारी नीतियों का प्रभाव आर्थिक और सार्वजनिक जीवन पर भी पड़ा। सड़कों के किनारे वृक्षारोपण, कुओं और जलाशयों का निर्माण, यात्रियों के लिए विश्राम–गृहों की व्यवस्था तथा मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालयों की स्थापना जैसे कार्यों ने जनसामान्य के जीवन–स्तर को उन्नत किया। यह पहली बार था जब राज्य ने व्यापक रूप से जनकल्याण को अपनी प्रमुख जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किया।

सांस्कृतिक दृष्टि से अशोक के प्रयासों ने भारतीय कला, स्थापत्य और साहित्य को नई दिशा प्रदान की। स्तम्भों, शिलालेखों, स्तूपों और विहारों का निर्माण न केवल धार्मिक महत्व का था, बल्कि यह मौर्यकालीन कला की उत्कृष्टता का भी प्रतीक है। सारनाथ का सिंहस्तम्भ, अशोक स्तम्भों की चमकदार पॉलिश तथा शिलालेखों की भाषा और शैली उस युग की उच्च सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करती है। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म के अंतरराष्ट्रीय प्रसार के कारण भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अशोक की धम्म नीति का प्रभाव अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उसने अपने पड़ोसी राज्यों और यूनानी शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए तथा धर्म–दूतों के माध्यम से नैतिक और सांस्कृतिक संपर्क को प्रोत्साहित किया। इससे युद्ध और विजय पर आधारित कूटनीति के स्थान पर शान्ति और सहअस्तित्व की नीति का विकास हुआ, जो विश्व इतिहास में एक नवीन प्रयोग के रूप में देखा जाता है।

अशोक के रूपांतरण का ऐतिहासिक महत्व

कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक के व्यक्तित्व एवं शासन–दृष्टि में जो परिवर्तन हुआ, उसका ऐतिहासिक महत्व अत्यन्त व्यापक और बहुआयामी है। यह परिवर्तन केवल एक शासक की व्यक्तिगत आस्था का परिणाम नहीं था, बल्कि इसने शासन की प्रकृति, राज्य की भूमिका तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों की अवधारणा को एक नवीन दिशा प्रदान की। विश्व इतिहास में ऐसे उदाहरण अत्यन्त विरल हैं, जहाँ एक महान् विजेता ने अपनी सैन्य शक्ति और विस्तारवादी नीति का स्वेच्छा से परित्याग कर नैतिकता और मानवता को शासन का आधार बनाया हो।

अशोक का रूपांतरण इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उसने पारम्परिक 'दिग्विजय' की अवधारणा के स्थान पर 'धम्म विजय' को स्थापित किया। प्राचीन काल में किसी भी साम्राज्य की शक्ति का मूल्यांकन उसके क्षेत्रीय विस्तार और सैन्य क्षमता के आधार पर किया जाता था, किन्तु अशोक ने यह प्रतिपादित किया कि वास्तविक विजय प्रजा के हृदयों को जीतने में निहित है। इस प्रकार उसने शक्ति–केन्द्रित राजसत्ता को नैतिक–आधारित शासन में रूपांतरित किया। यह परिवर्तन शासन के इतिहास में एक नवीन आदर्श के रूप में स्वीकार किया जाता है।

अशोक के रूपांतरण का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसने धर्म को राजनीतिक प्रभुत्व का साधन न बनाकर सामाजिक नैतिकता और लोककल्याण का माध्यम बनाया। उसका धम्म किसी संकीर्ण धार्मिक प्रचार का उपकरण नहीं था, बल्कि वह एक सार्वभौमिक नैतिक आचार–संहिता थी, जिसमें सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सम्मान का भाव निहित था। इस नीति ने बहुधार्मिक भारतीय समाज में सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक एकता को सुदृढ़ किया, जो भारतीय परम्परा की एक स्थायी विशेषता बन गई।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी अशोक का रूपांतरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उसने युद्ध और साम्राज्यवादी विस्तार के स्थान पर शान्ति, मैत्री और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को महत्व दिया। यूनानी शासकों तथा दक्षिण भारतीय राज्यों के साथ उसके संबंध इस बात के प्रमाण हैं कि उसने कूटनीति को नैतिक आधार प्रदान किया। धर्म–दूतों के माध्यम से बौद्ध धर्म का जो अंतरराष्ट्रीय प्रसार हुआ, उसने भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया और एशिया के विभिन्न देशों के साथ स्थायी सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए।

अशोक का रूपांतरण भारतीय राजनीतिक परम्परा में लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा का प्रारम्भिक और सशक्त उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। प्रजा के भौतिक और नैतिक उत्थान के लिए किए गए उसके कार्यों ने यह स्पष्ट किया कि राज्य का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि जनसाधारण के जीवन–स्तर को उन्नत करना भी है। यह विचार आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के साथ भी साम्य रखता है।

उपसंहार

कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक का रूपांतरण भारतीय इतिहास की एक ऐसी अद्वितीय घटना है, जिसमें एक साम्राज्यवादी विजेता का हृदय मानवीय संवेदनाओं से इस प्रकार प्रभावित हुआ कि उसने हिंसा और विस्तारवादी नीति का परित्याग कर नैतिक शासन का मार्ग अपनाया। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत पश्चाताप का परिणाम नहीं था, बल्कि एक व्यापक वैचारिक क्रान्ति थी, जिसने शासन, समाज और संस्कृति को नई दिशा प्रदान की। अशोक ने अपने धम्म के माध्यम से यह सिद्ध किया कि राज्य की वास्तविक शक्ति उसकी प्रजा के नैतिक उत्थान, सामाजिक समरसता और लोककल्याण में निहित होती है। धार्मिक सहिष्णुता, प्रजा–कल्याण, अहिंसा और करुणा पर आधारित उसकी नीतियों ने भारतीय संस्कृति को एक स्थायी मानवीय आधार प्रदान किया। उसके द्वारा स्थापित स्तम्भलेख और शिलालेख आज भी इस बात के साक्षी हैं कि शासन को नैतिकता से अभिसिंचित कर एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अशोक का यह रूपांतरण शान्ति और सहअस्तित्व का संदेश देता है। उसने यह प्रतिपादित किया कि युद्ध और रक्तपात से प्राप्त विजय क्षणिक होती है, जबकि नैतिक मूल्यों पर आधारित विजय स्थायी और सार्वभौमिक होती है। इस दृष्टि से अशोक का जीवन आधुनिक विश्व के लिए भी अत्यन्त प्रासंगिक है, जहाँ शक्ति–संतुलन और संघर्ष की राजनीति के स्थान पर सहअस्तित्व और मानवीय मूल्यों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

इस प्रकार कलिंग युद्ध से धम्म विजय तक की अशोक की यात्रा न केवल एक ऐतिहासिक घटना का वर्णन है, बल्कि यह सत्ता और नैतिकता के समन्वय का एक शाश्वत आदर्श भी प्रस्तुत करती है। उसका रूपांतरण यह संदेश देता है कि किसी भी शासन की स्थायित्व और महानता उसकी सैन्य शक्ति में नहीं, बल्कि उसकी मानवीय संवेदनाओं और लोककल्याणकारी नीतियों में निहित होती है। यही अशोक की ऐतिहासिक विरासत है, जो उसे विश्व इतिहास के महानतम शासकों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करती है।

संदर्भ सूची

1. थापर, रोमिला. अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन. ग्रन्थशिल्पी, दिल्ली।
2. पाण्डेय, विमल चन्द्र. प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. किताब महल, इलाहाबाद।
3. झा, डी. एन. प्राचीन भारत का इतिहास. हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
4. शर्मा, आर. एस. प्राचीन भारत. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

5. सिंह, उपेन्द्र. प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत का इतिहास (पाषाणकाल से 12वीं सदी तक). पियर्सन, नई दिल्ली।
6. चन्द्र, सतीश. प्राचीन भारत का इतिहास. ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
7. मुकर्जी, राधाकुमुद. चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. रायचौधरी, एच. सी. प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास. किताब महल, इलाहाबाद।
9. बाशम, ए. एल. अद्भुत भारत (The Wonder That Was India का हिन्दी अनुवाद). शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।
10. त्रिपाठी, रामशरण. प्राचीन भारत का इतिहास. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।